संपादक के नोट

मेरे सारे पाठकों को हमारा प्रभु और मुक्तिदाता येशु मसीह के नाम से अभिवादन।

आज हम शायद सोच रहे हैं कि हम जीवन में असफ़ल हैं, लेकिन हमारा परमेश्वर एक अच्छा परमेश्वर है। परमेश्वर की आराधना हमेशा एक धन्यवाद–भरा हृदय से करो।

अय्यूब ९रू१० कहता है – **वह समझ से परे अद्‌भुत कार्य, और अनगिनत आश्चर्यकर्म करता है।**

परमेश्वर जिसने सारी कमियों पर जय पाया जिसने दुख को आनंद में बदला और उन सारे आँसुओं को पोंछ दिया, उन दिनों यरूशलेम, यहूदा और कफरनहूम में और उन सारे चमत्कारों को किया। आज, वह तुम्हारे जीवन में भी यह कर सकता है। येशु, वही है, कल आज और हमेशा। वह, वही न बदलनेवाला येशु है! आज, हमारे चमत्कार को प्राप्त करने के लिए, परमेश्वर का आत्मा पूछ रहा है, तुम्हारे पास क्या है?

निर्गमन ४रू२ कहता है – **तब यहोवा ने उस से कहा, "तेरे हाथ में वह क्या है? और उसने कहा, "लाठी।"**

मूसा फिरौन की बेटी के पुत्र समान पाला–पोसा गया। मूसा ने अपने बच्पन के दिनों में सोचा होगा कि एक दिन वह मिस्र का फिरौन बनेगा। लेकन मूसा जब किशोरावस्ता में आया, उसने सोचा जैसे दिया गया है **इब्रानियों** ११:२४-२५ में – **विश्वास ही से मूसा ने बड़े हो जाने पर फ़िरौन की बेटी का पुत्र कहलाना अस्वीकार कर दिया। उसने पाप के क्षणिक सुख भोगने की अपेक्षा, परमेश्वर की प्रजा के साथ दुख भोगना ही अच्छा समझा।**

यह सोचकर कि वह इस्राएलिओं को मिस्रियों से छुड़ाएगा, उसने हत्या की। **निर्गमन** २रू ११–१२ कहता है – **फिर ऐसा हुआ कि जब मूसा जवान हो गया तो उसने अपने भाई–बन्धुओं के पास जाकर उनके कठोर परिश्रम पर ध्यान दिया और देखा कि मेरे एक इब्रानी भाई को एक मिस्री पीट रहा है। जब उसने इधर–उधर दृष्टि डाली और देखा कि आसपास कोई नहीं है, तो उसने उस मिस्री को मार डाला और बालू में छिपा दिया।**

यह समाचार फिरौन तक पहुँचा, और मूसा ड़रकर, सब कुछ छोड़ दिया और मिद्यान की ओर भाग गया। चालीस वर्ष तक उसने भेड़ों को चराया, उसके हाथ में लाठी था। चालीस वर्ष तक उसने साधारण जीवन जीया। उस लाठी के साथ वह होरेब पर्वत पर पहुँचा। जब प्रभु मूसा से होरेब पर्वत पर मिला, उसने उससे पूछा कि तुम्हारे हाथ में क्या है? जब मूसा ने उत्तर दिया कि यह एक लाठी है, प्रभु ने उससे कहा कि उसे नीछे फैंके। जब मूसा ने लाठी को नीछे फैंका वह साँप में बदल गया। वह परमेश्वर जिसने शैतान के सिर को कुचला, उसी ने हमारे हाथों में साँप के पूँछ को दिया है। **लूका १०:१९ – देखो, मैंने तुम्हें सापों और बिच्छुओं को कुचलने तथा शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है, अतः कोई तुम्हें हानि नहीं पहुँचाएगा।**

प्रभु ने मूसा से कहा कि अपने हाथ को बढा और साँप को पूँछ से पकड़ले। उसने अपने हाथ को बढाया और उसे पकड़ा और वह उसके हाथ में परमेश्वर का लाठी बना। लाठी के द्वारा प्रभु ने बहुत–से चमत्कारों को मूसा द्वारा किया। लाठी के द्वारा प्रभु ने मिस्रियों को दस महामारी से क्लेश पहुँचाया। उसने इस्राएलियों को मिस्रियों के बंधन से छुड़ाया। जब मूसा ने लाल समुद्र पर लाठी उठाया, वह दो भाग में विभाजित हुआ। उसने जब फिर से लाठी उठाया फिरौन की सेना लाल समुद्र में डूब गया। अमालेकियों के साथ जब इस्राएलिओं ने लड़ाई की मूसा ने लाठी को आकाश की ओर बढाया इस्राएलिओं को विजय प्राप्त हुआ। जब उसने लाठी से चट्टान को मारा उसमे से पानी बहकर निकला। इसलिए वह लाठी परमेश्वर का लाठी था। और उसने अद्भुत कार्य किए।

उस दिन मूसा के हाथ में लाठी था, आज हमारे हाथ में पवित्र–शास्त्र है। यह निश्चित रूप से हमारे जीवन में महान चमत्कारों को करेगा। जब तुम्हारे हाथों में परमेश्वर का वचन है तब तुम कभी असफ़ल नहीं होओगे। तुम हमेशा येशु के द्वारा एक जयवंत जीवन जियोगे।

मैं भी विश्वास करती हूँ कि मेरे पाठक भी परमेश्वर के वचन से मज़बूत बनेंगे और जयवंत जीवन जियेंगे।

परमेश्वर तुम सबको आशीष दें।

– पास्टर सरोजा म.

शरद और वसन्त की वर्षा

होशे ६रू३ – आओ, ज्ञान की खोज करें, वरन यहोवा के ज्ञान को यत्न से ढूंढ़ें। उसका प्रकट होना भोर के समान निश्चित है; वह वर्षा के समान, हां, बसन्त की वर्षा के समान जो धरती को सींचती है हम पर आएगा। हम हवा को परमेश्वर के आत्मा के चिह्न समान देखते हैं। उदाहरण – जब काले बादल आकाश में इकट्ठा होते हैं, हम सोचते हैं कि वर्षा हो सकता है। लेकिन जब एक शक्तिशालि हवा आकर बादलों को और अंधकार को दूर कर देती है तब दिन एक बार फिर उजाले सूरज की रोशनी से प्रकाशित होता है। आतमिक हवा अंधकार को ले जाता है और हमारे जीवनों में उजाले को ले आता है। इसी प्रकार, आज हम देखने वाले हैं शरद और वसन्त वर्षा के महत्तव को परमेश्वर के आत्मा के चिह्न के रूप में और उसका महत्तव हमारे जीवन में। जब हमारे पास एक वाटिका है, हमे वृक्षों को समय–समय पर पानी देना ज़रूरी हैं क्योंके पानी के बिना पौधें मुर्झा जाएंगे। इसी प्रकार, अगर हमारे पास शरद और वसन्त की वर्षा हमारे जीवनों में नहीं हैं, हमारे जीवन भी संसार के मार्गों में मिट जाएगा। परमेश्वर की उपस्थिति हमारे जीवन में शरद और वसन्त की वर्षा के रूप में है – वह हमारा पालन–पोषण हर समय करता है। राजा सुलैमान एक ज्ञानी राजा था। जब इस्राएल में एक सूखा आया, उसने इस सूखे का कारण जाना। उसने एहसास किया कि यह उसके लोगों के पापों के कारण ही इस्राएल के भूमि पर वर्षा न हूई। **१ राजा ८:३५-३६ – "जब तेरे विरूद्ध पाप करने के कारण आकाश बन्द हो जाए और वर्षा न हो और तेरे दुख देने के कारण वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करके तेरे नाम को मानें और अपने पापों से फिरें, तब तू स्वर्ग में सुनकर अपने दासों और अपनी प्रजा इस्राएल के पाप क्षमा करना, निश्चय तू उन्हे भला मार्ग सिखा जिस पर उन्हें चलना चाहिए। और अपने इस देश पर जिसे तू ने अपनी प्रजा को उत्तराधिकार में दिया है, पानी बरसाना।** यह केवल तब है कि जब इस्राएलयों को उनके पापों के बारे में जागृत किया गया और उन्होने मार्गों को बदल दिया कि परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं को सुना और वर्षा को भूमि पर फिर एक बार भेजा। इसी प्रकार, जब हमारा जीवन पाप से भरा है और हम पाप में तड़पते हैं, परमेश्वर उसके आत्मा के बारीश को हम पर आने से रोकता है। यह केवल तब है कि हम ताड़ना स्वीकार करके पश्चाताप करते हैं कि हमारे जीवन शरद और वसन्त की वर्षा में सफ़ल होगा। पवित्र शास्त्रों में हमने देखा हैं कि राजा अहाब के राज के समय कैसे नबी एलिय्याह इस्राएल पर एक सूखे की घोषणा करता है। एलिय्याह यह सहन नहीं कर पा रहा था कि यह भूमि कैसे पूरी तरह से जादू टोने में डूबी हुई थी और यह भी की पाप बहुतायत रीति से इस्राएल में बढ़ रहा था। इसी कारण, नबी एलिय्याह ने परमेश्वर से प्रार्थना किया कि इस भूमि पर वर्षा न हो ताकि इस्राएली लोग एक सबक सीखे। **१ राजा १७रू१ – तब तिशबी एलिय्याह ने जो गिलाद के परदेशियों में से था अहाब से कहा,**

"इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूं, निस्सन्देह इन वर्षों में मेरे कहे बिना न तो मेघ बरसेगा और न ओस पड़ेगी।" परमेश्वर ने उसके लोगों को सारी ऋतुओं के फलों से आशिषित किया – इस्राएल की भूमि आशिषित थी। लेकिन लोग परमेश्वर के प्यार, आशिषों को और अनुग्रह को भूल गए और उनके हृदयों की इच्छाओं के अनुसार पाप किया। इसलिए एलिय्याह जानता था कि इस्राएलओं को परमेश्वर की ओर वापस लाने का तरीका केवल उनको सबक सीखाकर था। इसलिए, उसने परमेश्वर से प्रार्थना किया, उस देश में सूखा लाने के लिए। **याकूब ५रू१७ – एलिय्याह भी हमारे ही जैसे स्वभाव का मनुष्य था; और उसने वर्षा न होने के लिए गिड़गिड़ा कर प्रार्थना की; और साढ़े तीन वर्षो तक धरती पर वर्षा न हुई।** जैसे कि हमने **होशे** ६ : ३ में देखा है, परमेश्वर चाहता है कि उसके आत्मा को हम पर उँढेल दे और हमे शरद और वसन्त की वर्षा से आशिषित करे, अगर लोग पश्चाताप करे और परमेश्वर की ओर लौटे दीनता के साथ। इस प्रकार एलिय्याह का मुख्य लक्ष्य लोगों को परमेश्वर के पास वापस लाना था, उनके कठोर हृदयों को बदल दे, पश्चाताप करे और परमेश्वर के पास दीन हृदय से लौटे। **यशायाह ४५रू११ – इस्राएल का पवित्र और उसका सृष्टिकर्ता यहोवा यों कहता है: मेरी सन्तान पर घटित होनेवाली घटनाओं के विषय में मुझ से पूछो, और मेरे हाथों के कार्यों को मुझ पर ही छोड़ दो।** क्या ऐसा कुछ है जो परमेश्वर हमारे बारे में नहीं जानता है? हमे परमेश्वर से आने वाले समयों के बारे में पूछना चाहिए – वह सब जानता है और ऐसा कुछ नहीं कि वह नहीं जानता है। एलिय्याह इस्राएलयों को परमेश्वर के हाथ में सौंपता है, उसने परमेश्वर से प्रार्थना किया कि वर्षा को तीन वर्ष और छः महिनों के लिए रूकाए। परमेश्वर ने एलिय्याह के प्रार्थनाओं का उत्तर दिया और इस्राएल के भूमि पर सूखा भेजा। यहोशू भी परमेश्वर द्वारा चुना गया एक नबी था वह एक साधारण मनुष्य था लेकिन वह अपने विश्वास में खरा था। उसकी शक्तिशाली प्रार्थनाओं से वह सूर्य और चंद्र को रूका सका। **यहोशू १०:१२ – उस दिन यहोवा ने एमोरियों को इस्राएलियों के वश में कर दिया। इसलिए यहोशू ने इस्राएलियों के सामने यहोवा से कहा, "हे सूर्य, गिबोन पर और हे चन्द्रमा, तू अय्यालोन की तराई पर ठहर जा।** हमे याद रखना है कि परमेश्वर ने नबियों को शक्तिशाली बनाया है। परमेश्वर से जो वे माँगते हैं वह पूरा होगा। हम देखते हैं, परमेश्वर ने नबियों को दी हुई शक्तियों को। **प्रकाशितवाक्य ११रू६ – उन्हें यह अधिकार है कि आकाश को बन्द कर दें जिससे कि उनकी नबूवतों क दिनों में वर्षा न हो और उन्हें सारे जल पर अधिकार है कि उसे लहू बना दें, तथा जब जब चाहें, पृथ्वी पर सब प्रकार की महामारी भेजें।** हमने प्रकाशितवाक्य के किताब में देखा हैं, नबियों को स्वर्ग को बंद करना, वर्षा को रूकाना, इनकी शक्ति दी है, उनके पास पानी को रक्त में बदलने का सामर्थ है, पृथ्वी को विपत्तियों से शापित करने का अधिकार है, इत्यादी। इसलिए याद रखना, नबियों के वचन का आज्ञा–पालन करना महत्त्वपूर्ण है। पवित्र शास्त्र

में, २ राजा, छटवे अध्यय में हम एक नबी के पुत्रों की कहानी को देखते हैं जिन्होंने यरदन में एक बड़े रहने की जगह बनाने का निर्णय लिया। वे लकड़ी इकट्ठा करने निकले अपने रहने के जगह को बनाने के लिए उन्होने नबी एलिशा को उनके साथ लिया। हम यहाँ देखते हैं कि जैसे उन में से एक लकड़ी काटने लगा, लोहे का कुल्हाड़ी पानी में गिर जाता है और वह रोता है यह कहते हुए, स्वामी, मेरा कुल्हाड़ी पानी में गिर गया है और वह किसी से माँगा हुआ कुल्हाड़ी था। हम देखते हैं कि नबी एलिशा ने एक चमत्कार किया – उसने लकड़ी के तुकड़े को काटकर उस स्थल में फैंका जहाँ कुल्हाड़ी गिरा और लोहा पानी के सतह पर तैरने लगा। इस प्रकार, लोहा का कुल्हाड़ी फिर से मिला। आगे उसी अध्याय में हम देखते हैं कि जब सिरिया का राजा इस्राएल के विरूद्ध लगातार युद्ध कर रहा था, राजा की हर एक युक्ति असफ़ल हुई क्योंके परमेश्वर ने राजा के युक्तियों को एलिशा को बताया और बदले में एलिशा ने इस्राएलियों को हर हमले से बचाया। २ राजा ६:८–१० – **सीरिया का राजा इस्राएल से युद्ध कर रहा था। उसने अपने कर्मचारियों से सलाह लेकर कहा, मेरी छावनी अमुक स्थान में होगी।" तब परमेश्वर के जन ने इस्राएल के राजा को यह कहकर सन्देश भेजा, सावधान! इस स्थान से होकर न जाना, क्योंकि सीरियाई इसी मार्ग से होकर आ रहे हैं।" अतः ईस्राएल के राजा ने उस स्थान को जिसके विषय में परमेश्वर के जन ने कहा था, दूत भेजा। इसी प्रकार वह उसे चेतावनी देता रहा जिस से राजा अनेक बार वहां अपनी रक्षा कर सका।** हर समय परमेश्वर का प्रकटीकरण एलिशा पर आया, सिरिया के राजा की युक्तियाँ नाश हुई और राजा हर समय हार जाता था।

२ राजा ६रू१६– २३ – **उसने उत्तर दिया, "मत ड़र, क्योंकि जो हमारे साथ हैं वे उनसे अधिक हैं जो उनक साथ हैं। तब एलीशा ने प्रार्थना की, "हे यहोवा, मैं प्रार्थना करता हूं, इसकी आंखे खोल दे कि देख सके। तब यहोवा ने सेवक की आंखें खोल दीं, और उसने देखाः एलीशा के चारों ओर पर्वत तो घोड़ों और आग के रथों से भरा हुआ था। और जब वे उसकी ओर बढ़े, तो एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना की, इन लोगों को अंधा कर दे। अतः एलीशा के वचन के अनुसार उसने उन्हें अंधा कर दिया। तब एलीशा ने उनसे कहा, मार्ग यह नहीं, और न यह वह नगर है। मेरे पीछे आओ तो मैं तुम्हें उस मनुष्य तक पहुंचा दूंगा जिसे तुम ढूंढ़ रहे हो।" और वह उन्हे सामरिया ले गया। और जब वे सामरिया में पहुंच गए तो एलीशा ने कहा, हे यहोवा, इन लोगों की आंखें खोल दे कि देख सकें। अत : यहोवा ने उनकी आंखे खोल दीं, और उन्होंने देखा कि हम सामरिया के बीच में हैं। तब इस्राएल के राजा ने उन्हें देखकर एलीशा से पूछा, हे मेरे पिता, क्या मैं इन्हें मार डालूं? क्या मैं इन्हें मार डालूं? उसने उत्तर दिया, तू उन्हें न मार। क्या तू जिन्हें तलवार और धनुष से बन्दी बना लेता उन्हें मार डालता? उनके आगे रोटी और जल रख कि वे खाएं और पिएं और अपने स्वामी के पास चले जाएं। अतः उसने उनके लिए बड़ा भोज तैयार**

किया, और जब वे खा–पी चुकें तो उन्हें विदा किया, और वे अपने स्वामी के पास चले गए। और सीरिया के दल इस्राएली देश में फिर न आए। इस भाग में हम देखते हैं कि कैसे परमेश्वर ने सिरिया के लोगों को अंधा कर दिया और इस प्रकार वें पकड़े गए। परमेश्वर ने नबी एलिशा का उपयोग उसके लोगों को बचाने के लिए किया। यह जब हुआ तब वें सामरिया में आए। एलिशा ने परमेश्वर से प्रार्थना किया कि उनकी आँखें खुल जाए। फिर से केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही जो पकड़े गए थे एलिशा द्वारा छुड़ाए गए। एक बार फिर सिरिया के लोगों ने उनके गलत किए–करायों पर से नहीं मुखरे, राजा लगातार इस्राएलियों पर हमला बोलता रहा। **२ राजा ६रू२४–३० – इसके पश्चात ऐसा हुआ कि सीरिया के राजा बनहदद ने अपनी सारी सेना को एकत्र किया और सामरिया पर आक्रमण करके उसको घेर लिया। तब सामरिया में बड़ा अकाल पड़ा। और देखो, वह ऐसा घिरा रहा कि गदहे का सिर चांदी के अस्सी शेकेल में, और कब की चौथाई भर कबूतर की बीट पांच शेकेल में बिकने लगी। अब इस्राएल का राजा तो शहरपनाह पर घूम रहा था कि एक स्त्री ने पुकार कर कहा , हे मेरे प्रभु, हे राजा, बचा! उसने कहा, यदि यहोवा तुझे न बचाए तो मैं कहां से बचाऊं? क्या खलिहान से? क्या दाखरस कुंड से? फिर राजा ने उस से पूछा, तुझे क्या हुआ? उस स्त्री ने उत्तर दिया, "इस स्त्री ने मुझ से कहा था, "अपना बेटा दे कि आज हम उसे खाएं, और मेरे बेटे को कल खाएंगे। अतः मेरे बेटे को हमने पकाकर खा लिया दूसरे दिन मैंने उस से कहा, ष्अपना बेटा दे कि हम खाएं परन्तु उसने अपने बेटे को छिपा दिया है।" और ऐसा हुआ कि जब उस स्त्री के वचन राजा ने सुने तो अपने वस्त्र फाड़े। वह तो शहरपनाह पर से जा रहा था, और लोगों ने देखा कि वह शरीर पर टाट ही धारण किए हुए है।** एक बार फिर सिरिया के राजा ने उसकी सेना को इकट्ठा किया और सामरिया पर कब्ज़ा किया। उस समय सामरिया पर बड़ा आकाल आया था। लोगों के मध्य वह स्थिति बहुत ही डरावना था। लोग भूखे मर रहे थे, एक ऐसा भी समय आया जब वें बच्चों को उबालकर खाने लगे। एक बार इस्राएल का राजा शहर से गुज़रा, उसने वह सब सुना जो उस भूमि पर हो रहा था और उसके कपड़ों को फाड़ दिया और उसके शरीर पर उसने टाट पहन लिया क्योंकि वह कुछ नहीं कर सकता था। अब फिर एक बार नबी एलिशा उस भूमि को छुड़ाने आता है, वह अंत मे नबुवत करता है उसके लोगों को कल इसी समय प्रभु तुम्हे सामरिया के फाटकों पर खाना दिलाएगा। जो उसके करीब थे, खास कर उस अफ़सर जिसने सारे चमत्कारों को देखा, उसने विश्वास नहीं किया। **२ राजा ७रू१–२ – तब एलीशा ने कहा, "यहोवा का वचन सुनो। यहोवा यों कहता है, "कल इसी समय सामरिया के फाटक पर एक शेकेल में एक सआ भर मैदा और दो सआ भर जव बिकेगा। तब जिस अधिकारी के हाथ का सहारा राजा लिया करता था, उसने यहोवा के जन को उत्तर दिया, "सुन, चाहे यहोवा आकाश के झरोखे खोल दे, फिर भी क्या ऐसा हो सकता है?" तब उसने कहा, "सुन, तू अपनी आंखों से तो देखेगा, परन्तु उसमें से खाने न**

पाएगा। यहाँ हम सच में देखते हैं, नबुवत सच हो जाता है और जैसे एलिशा ने अधिकारी से कहा, वह देखेगा, लेकिन उसमे से खा नहीं पाएगा। उस अधिकारी ने इस चमत्कार को देखा लेकिन वह सामरिया के फाटकों पर हुई भगदड़ द्वारा मारा गया। ऊपरी कहानी जो २ राजा छटवे अध्याय में हैं, हमने देखा हैं कि कैसे नबी एलिशा परमेश्वर के अनुग्रह का साक्षी देता है। परमेश्वर का वचन कभी ज़मीन पर नहीं गिरता – जो कुछ परमेश्वर कहेगा वह उसे करेगा। लेकिन यह हमारा विश्वास हैं कि हम भरोसा करें या ना करें। **प्रकाशितवाक्य ११रू६ – उन्हें यह अधिकार है कि आकाश को बन्द कर दें जिससे कि उनकी नबूवतों के दिनों में वर्षा न हो और उन्हें सारे जल पर अधिकार है कि उसे लहू बना दें, तथा जब जब चाहें, पृथ्वी पर सब प्रकार की महामारी भेजें।** प्रकाशितवाक्य ११ में हम उन शक्तियों को देखते हैं जो परमेश्वर ने उसके नबियों को दिया है। जो भी वें परमेश्वर से विश्वास में माँगेंगे, उसका उत्तर दिया जाएगा। **यिर्मयाह ३रू३ – इसीलिए वर्षा रोक दी गई है और बसन्त ऋतु की बौछार नहीं होने पाई। तेरा माथा तो वेश्या का है, क्योंकि तू लज्जित होना जानती ही नहीं।** कई बार, परमेश्वर का क्रोध हम पर होता है। इसलिए, परमेश्वर हमारे जीवन से शरद और वसन्त की वर्षा को रोकता है। जैसे पेड़ मुर्झा जाते हैं जब वर्षा नहीं होती, इसी प्रकार, हमारे जीवनों में भी सूखा आता है परमेश्वर के अनुग्रह और आशिष के बिना जब हमारे जीवनों में शरद और वसन्त की वर्षा नहीं होती, हमारे जीवन में सब कुछ सूख जाता है, आशीष नहीं, सफ़लता नहीं, हमारे जीवन में रूकावट होगी उस हर चीज़ में जो हम करते हैं, आदि। यह वह समय है जब हम अपने–आप को टटोल कर सब कुछ ठीक से करना है हमे अपने–आप को जाँचकर मालूमात करना हैं कि हम कहाँ गलत गए हैं हमारे और परमेश्वर के बीच के संबंध में। क्या यह हमारा आज्ञा न मानना, या हमारा घमंड, या हमारा स्वाभिमान है, आदि...? हमने देखा हैं अब तक कि परमेश्वर ने वर्षा को रोका और उस भूमि पर आकाल भेजा। अब हम देखते हैं कि परमेश्वर कैसे पानी भेजता है दुनिया पर जल–प्रलय लाकर उसे नाश करने के लिए। नूह के समय में पाप इस दुनिया में बहुत बढ़ गया। परमेश्वर का लोगों को सबक सिखाना ज़रूरी था। वें अपने पापों से नहीं फिरे और वें पाप करते रहे। जब परमेश्वर ने जाना कि लोग ताड़ना को स्वीकार नहीं कर रहे थे और उनके पापों से नहीं मुखर रहे थे, उसने चालीस दिन और चालीस रात इस दुनिया में वर्षा भेजकर नाष किया। **उत्पत्ति ७:२ – तू अपने साथ शुद्ध पशु की प्रत्येक जाति में से नर और उसकी मादा के सात जोड़े लेना; और जो अशुद्ध पशु हैं उनमें से एक जोड़ा लेना अर्थात नर और उसकी मादा।** लेकिन परमेश्वर ने दुनिया को नाष करने से पहले नूह से कहा कि वह जहाज़ में नर–मादा ले जाए इस दुनिया के सारे जानवरों में से। इसलिए, नूह के परिवार के साथ, हर प्रकार के जानवर मे नर–मादा उस जहाज में बच गया।

हम योना की कहानी को भी जानते हैं। परमेश्वर ने नबी योना के नीनवे के लोगों को बचाने के लिए चुना। लेकिन योना जानता था कि हमारा परमेश्वर एक प्यारा परमेश्वर है, वह अनुग्रह–भरा जल्दी, क्रोध न करने वाला और दया–करूणा से भरा परमेश्वर है। इसलिए, योना ने पहले परमेश्वर के आज्ञा का पालन नहीं किया और वह तर्शीश को भागना चाहता था। समुद्र के मध्य उसने एक तूफ़ान का सामना किया और उसे जहाज से बाहर फैंका जाना पड़ा, क्योंकि यह परमेश्वर का दण्ड़ उसपर था। एक मच्छी योना के लिए बनाया गया और मच्छी के अंदर तड़पने के बाद, उसकी उल्टी की गई नीनवे के सूखे भूमि पर। योना अंत में नीनवे को आता है लोगों को परमेश्वर के क्रोध की चेतावनी देने के लिए। नीनवे के लोगों ने उनके पापों को मानकर ताड़ना स्वीकार किया, प्रायश्चित किया और परमेश्वर से माफ़ी माँगी। इस प्रकार, उनका जीवन भले के लिए बदल गया। यहाँ हम देखते हैं कि नीनवे के देश के लोग ने अपने आप को नाश होने से बचाया, क्योंकि उन्होंने अपने पाप को मानकर माफ़ी माँगी। **१ शमूएल १२:१४-१९ – यदि तुम यहोवा का भय मानो और उसकी आराधना करो और उसकी वाणी सुनो और यहोवा की आज्ञाओं के विरूद्ध विद्रोह न करो तो तुम और जो राजा तुम पर राज्य करता है, दोनों ही अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे पीछे चलोगे। और यदि तुम यहोवा की वाणी न सुनो परन्तु यहोवा की आज्ञा के विरूद्ध विद्रोह करो तो यहोवा का हाथ जिस प्रकर तुम्हारे पूर्वजों के विरूद्ध था उसी प्रकार तुम्हारे विरूद्ध भी रहेगा। अब भी ठहरे रहो, और इस महान कार्य को देखो जिसे यहोवा तुम्हारी आंखों के सामने करेगा। क्या आज गेहूँ की कटनी नहीं हो रही है? मैं यहोवा को पुकारूँगा कि वह गर्जन और वर्षा भेजे। तब तुम जान लोगे और देखोगे कि अपने लिए राजा मांग कर तुमने यहोवा की दृष्टि में बड़ी दुष्टता की है। अतः शमूएल ने यहोवा को पुकारा। तब यहोवा ने उसी दिन गर्जन और वर्षा भेजी जिससे सब लोग यहोवा और शमुएल से बहुत डर गए। तब सब लोगों ने शमूएल से कहा, "अपने परमेश्वर यहोवा से अपने दासों के लिए प्रार्थना कर कि हम मर न जाएं क्योंकि हमने अपने लिए राजा की मांग करके सब पापों को और भी बढ़ा दिया है।** परमेश्वर का न्याय भय ले आता है लोगों के मध्य में ..... हमे कभी भी परमेश्वर के न्याय को हम पर आने नहीं देना चाहिए। वचन १४ और १५ कहता है कि जब हम भय मानते हैं और परमेश्वर की सेवा करते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, प्रभु हमारे साथ रहेगा। लेकिन जब हम पालन नहीं करते हैं परमेश्वर के वचन और आज्ञा का, परमेश्वर का हाथ हमारे विरूद्ध रहेगा। हमे बहुत ध्यान रखना चाहिए जब हम परमेश्वर के वचन को पढ़ते हैं। **१ कुरिन्थियों ११रू२६–३० – क्योंकि जब जब तुम इस रोटी को खाते और इस कटोरे में से पीते हो तो जब तक प्रभु न आ जाए उसकी मृत्यु का प्रचार करते हो। इसलिए जो कोई अनुचित रीति से यह रोटी खाता और प्रभु के इस कटोरे में से पीता है, वह प्रभु की देह और लहु का दोषी ठहरेगा। अतः मनुष्य अपने आपको परखे तब इस रोटी को खाए और इस कटोरे में**

से पीए। क्योंकि जो खाता और पीता है, यदि उचित रीति से प्रभु की देह को पहिचाने बिना खाता पीता है तो अपने ऊपर दण्ड लाने के लिए ही ऐसा करता है। इसी कारण तुम में से बहुत–से निर्बल और रोगी है, और बहुत–से सो भी गए। हमे परमेश्वर के क्रोध को हम पर कभी आने नहीं देना चाहिए – हमे अपना जीवन तत्परतापूर्वक जीना चाहिए। हमारा परमेश्वर इस दुनिया में आया है हमे जीवन देने के लिए और बहुतायत जीवन देने के लिए। हमारे अच्छे दिनों में, हमे परमेश्वर के अनुग्रह को नहीं भूलना चाहिए और न उसके शक्तिशालि कार्यों को भी जो हमारे जीवन में हुआ हैं। जैसे नबी एलिय्याह कहता है, परमेश्वर ने सारी वस्तुओं को हमारे जीवन में सुंदर बनाया है और ऋतुओं में वह भरपूरी से देता है। इस संदेश में हमने देखा कि कैसे परमेश्वर उसके आशिषों को हम पर उण्ड़ेलना चाहता है शरद की वर्षा और वसन्त की वर्षा के रूप में। इस वर्षा के बिना, हमारा जीवन व्यर्थ और बंजर है। हमारा जीवन केवल तब योग्य है जब हम परमेश्वर के शरद की वर्षा और वसन्त की वर्षा को प्राप्त करते हैं। हमने देखा हैं परमेश्वर के उन शक्तियों को जिन्हे उसने उसके नबियों के हाथों मे सौंपा है। हम देखते है नबी एलिय्याह के प्रार्थना ने वर्षा को ३ वर्ष और ६ महिनों के लिए इस्राएल के भूमि पर रोका। हम ने उन आशिषों को देखा जो नबी एलीशा ने नबी को पुत्रों पर लाया जब वें उसे उनके साथ ले गए लकड़ी जमा करने के लिए ताकि वें अपने रहने के जगह को बढ़ा सके और नबी के प्रार्थनाओं द्वारा आशिष भी पा सके जो इस्राएल की भूमि के सिरिया के राजा के लगातार हमला से बचाता था। हमने यह भी देखा है कि परमेश्वर जिसने इस्राएल की भूमि पर भूखमरी भेजा उसीने ज़ोरदार वर्षा और जल प्रलय से नूह के समय पर भूमि को नाष किया। आजके संदेश का ध्यान परमेश्वर ने नबियों को दी हुई शक्तियों के बारे में है। याद रखें, आज भी, नबियों को शक्तिशालि रूप से उपयोग करता है। हमे अपने नबियों पर विश्वास रखना चाहिए, उनके वचनों पर भरोसा करना चाहिए, हर ताड़ाना को हमारे जीवनों में लेना चाहिए और प्रायश्चित करके अपने पापों से मन फिराना हैं परमेश्वर उसका शरद और वसन्त की वर्षा हम पर उण्ड़ेलेगा और हमारे जीवनों में से पापों को मिटाकर आशिषित करेगा। यह संदेश उन सबके लिए आशीष बने जो इसे पढ़े। प्रभु की स्तुति हो।

पास्टर सरोजा म.